%%A. D. 1190‒1436

%%Ś. 1112‒1358

%%( From 1184—19-9-1264 A. D.)

%%p. 221

No. 137

Lakshmī Narasiṃha Temple at Śiṃhāchalam<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 719; A. R. No. 253 of 1899;

I. M. P. Vol. III, P. 1676, No. 81. )

Ś. 1200

(१।) स्वस्ति [।।] श्रीवीरभानुनृपतेरभिवर्द्धमा-

(२।) ने अष्टादशांक कलिते जयराज्यवर्षे श्री-

(३।) ते कलिग्गविषयं विजयावनींद्रे

(४।) धीरेभिरक्षति विचक्षणरक्षणज्ञे [१] शा-

(५।) काब्दे व्योमयुग्मद्युमणि परिण-

(६।) ते कात्तिके कृष्णपक्षे दीपावल्युत्सवे<2>

(७।) श्रीनरहरिवपुषस्सिंहशैलालय-

(८।) [स्य] । दीपस्याख ड्डधाम्नस्सविधविवृतये

(९।) श्रीमदल्लालनाथप्पेर्म्मालास्यात्मजातो वि-

(१०।) य ... ... ... ...स्सोप्यदान्नव्यधेनुः [।। २] वि-

(११।) श्वामित्राप्त [गो]त्रोप्तौ नायको द्रविडोत्त-

(१२।) मः [।] दीपदड्डामपि प्रादाद्दीप्तलोहं ह-

(१३।) रेम्मुंदे ।। [३] आचंद्राक्कमयं धर्म्मो धन्यै

(१४।) द्धर्म्मपरायणैः [।] वैष्णवै स्सिहशैलस्थैः

(१५।) पालनीय[ः] प्रयत्नतः ।। [४] एषा नृसिह-

<1. On the third pillar in the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 17th October, 1278 A. D.>

%%p. 222

(१६।) सुधियो रचिता प्रशस्तिः । स्वस्ति शक-

(१७।) वर्षवुलु १२०० गुनेंटि श्रीम-

(१८।) दनंत्तवम्म(र्म्म) प्रतापवीर श्रीभा

(१९।) नुदेव प्रवर्द्धमान विजयरा-

(२०।) ज्य संवत्सरंवुलु १८ गु श्राहि य-

(२१।) ंदु विजयदेवपडिरायल कलि[ं]ग-

(२२।) परीक्ष मज्जि तनमुन कात्तिक दीपाव-

(२३।) लि महोत्सवमुनांडु विश्वामित्र-

(२४।) गोत्रमुन द्राविडपेरुमालि कोड्कु अ-

(२५।) ल्लालनायकुंडु तनकु भगवत भ-

(२६।) क्ति को[रि] श्रीसिहगिरिनाथुनि दिव्यसन्नि-

(२७।) धियंदु अख डद पानकु पटिन

(२८।) धेनुवुलु ४[७]टिलो पामुवोयु

(२९।) कोडवु एरि यवोयुनि गोचरान २४ नु ल-

(३०।) कुमनकोनारि गोचरमुन २३ नुंगा ४७

(३१।) टिकि नेरुदीपान नेइ चल्लंगलदि वीरे पे-

(३२।) टिन दीपडंडु १ टि विस्यलु २४टि वेल

(३३।) गंडमाडलु १२ तिरुश्रर्द्ध जामुन

(३४।) पालु अरगिचुटकु पेट्टिन मोदालु ५

(३५।) ई पालु स्वदेशिकि परदेशिकि विनियोगिप-

(३६।) ंगलारु ई धम्म(र्म्म) आचद्राक्कमु श्रीवैष्णव रक्ष [।।]